द्वेष आदि द्वन्द्वरूप; **मोह**=मोह से; **निर्मुक्ताः**=मुक्त हुए; **भजन्ते**=भजन करते हैं; **माम्**=मेरा; **दृढव्रताः**=निष्ठापूर्वक।

अनुवाद

परन्तु जिन्होंने पुण्य कर्मों का आचरण किया है और जिनके सम्पूर्ण पाप नष्ट हो गये हैं, वे द्वन्द्वरूप मोह से मुक्त पुरुष निष्ठापूर्वक मेरी सेवा करते हैं।।२८।।

तात्पर्य

इस श्लोक में दिव्य शुद्ध सत्त्वमयी अवस्था की प्राप्ति के अधिकारियों का उल्लेख है। जो पापात्मा, अनीश्वरवादी, मूढ़ और कपटी हैं, उन के लिए इच्छा-द्वेष आदि द्वन्द्वों का उल्लंघन करना बड़ा कठिन है। जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन में धर्म का आचरण किया है और पुण्यकर्म करते हुए पापों का नाश कर दिया है, वे पुरुष ही भक्तियोग को अंगीकार करते हैं और इस प्रकार शनैः-शनैः श्रीभगवान् के शुद्ध ज्ञान को पाते हैं। फिर शनैः-शनैः उन्हें समाधि में भगवान् का ध्यान होने लगता है। यह शुद्ध सत्त्व में स्थित होने की विधि है। जीव को मोहमुक्त करने में समर्थ शुद्ध भक्तों के सत्संग से कृष्णभावनाभावित हो जाने पर यह स्थिति बड़ी सुलभ हो जाती है।

श्रीमद्‌भागवत में कथन है कि यदि मोक्ष की सच्ची अभिलाषा हो तो नित्य-निरंतर भक्तसेवा करे। इसके विपरीत, जो विषयी जीवों का संग करता है, वह अन्धकारमय भवसमुद्र के पथ पर अग्रसर हो रहा है। महाभागवत जन इसी प्रकार के बद्धजीवों को मायामुक्त करने के लिए वसुधा पर परिव्राजन करते हैं। निर्विशेषवादी नहीं जानते कि 'मैं भगवान् का नित्यदास हूँ,' अपने इस स्वरूप को भुला देना भगवान् के नियम की सबसे गम्भीर अवहेलना है। यह निश्चित है कि अपने स्वरूप में फिर स्थित हुए बिना भगवान् को जानना अथवा उनके भक्तियोग में निष्ठापूर्वक पूर्णरूप से संलग्न होना सम्भव नहीं है।

जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये।
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम्।।२९।।

जरा=वृद्धावस्था; **मरण**=मृत्यु (से); **मोक्षाय**=मुक्ति के लिए; **माम्**=मेरे; **आश्रित्य**=परायण होकर; **यतन्ति**=यत्न करते हैं; **ये**=जो; **ते**=वे; **ब्रह्म**=ब्रह्म को; **तत्**=उस; **विदुः**=जानते हैं; **कृत्स्नम्**=पूर्ण; **अध्यात्मम्**=अध्यात्म को; **कर्म**=सकाम कर्म को; **च**=भी; **अखिलम्**=सम्पूर्ण।

अनुवाद

जो जरा-मरण से मुक्ति के लिए यत्नशील हैं, वे सुधीजन मेरी भक्ति का आश्रय ग्रहण करते हैं। वे वास्तव में ब्रह्मभूत हैं, क्योंकि वे अध्यात्म और सकाम कर्म के तत्त्व को सम्पूर्ण रूप से जानते हैं।।२९।।